वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 20	Year 2	Volume 8	May 2014 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 100-see page 2

विचार

ईश्वर में हमारा विश्वास परिपूर्ण होना चाहिये

Seek Refuge in The Supreme and trust Him entirely

महाभारत का ऐक सुन्दर संस्मरण है––जैसा कि बहुत लोगों को विदित है, श्री कृ"ण और पांच पाण्डवों की पत्नि द्रोपदी आपस में रिश्तेदार थे। एक बार जब श्री क".k द्रोपदी से वार्तालाप कर रहे थे तो द्रोपदी ने श्री कृ"ण को उलहाने देते हुए कहा–– भगवान जब कौरवों ने मेरा चीर हरण किया तो आप आये तो सही और आप ने मेरी रक्षा भी की पर आप ने आने मे बहुत देर कर दी। अगर आप पहले आये होते तो शायद मै उस अपमान से बच गई होती।

श्री कृ"ण द्रोपदी की यह बात सुन कर मुस्करा दिये और बोले––हे द्रोपदी, तुमने मुझे याद कब कियां? उस समय जब कि तुम्हे बाकी हर तरफ से निराशा ही हाथ लगी। पहले तुम ने अपने ससुर धृतjk"V को पुकारा जब उन को असमर्थ पाया तो भी"मपितामह और द्रोणचार्य को सहायता के लिये पुकारा। जब हर किसी ने विवश्ता में मुंह नीचा कर लिया तो तुम ने मुझे पुकारा और मैं आ गया। क्या यह सत्य नहीं कि तुम्हे मेरी याद सब से अन्त में आई। और वह भी तब आई जब कि तुम्हे बाकी सब दरवाजे बन्द दिखाई दिये।

इस के विपरीत हम राजा हरीशचन्द्र के जीवन से परिचित हैं। उनको सत्य के मार्ग पर पूरा भरोसा था। उस सत्य के पालन में उनका राज्य, रानी और सन्तान सब चले जाते हैं पर उनका सच्चाई पर भरोसा टस से मस नहीं होता और अन्त में जब वह सत्य परीक्षा में सफल होते हैं तो सब खोया हुआ वापिस आ जाता है

यही हाल हम सब का है। कहते तो हम यही हैं कि हम ईश्वर

Contact: Bhartendu Sood, Editor, Publisher & Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047

Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,

E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

पर पूरा भरोसा करते हैं पर हमारा भरोसा द्रोपदी के भरोसे की तरह ही होता है। जब रिश्तेदार, धन, सम्पर्क, तांत्रिक, ज्योति"यों व पण्डितो से हार चुकते है और निराश हो जाते हैं तो आखिर में भगवान के चरणों में जाते है। पर आवश्यकता इस बात की है कि हम ईश्वर को हर समय याद करके उसकी कृपा की याचना करें। यही नहीं उस पर पूरा भरोसा करके यह माने कि वह जो कर रहा है इसी में हमारी भलाई है। जो हमारे कर्म हैं उनका फल तो हमें अवश्य मिलना है। उस में भगवान ने कुछ नहीं करना परन्तु जब हम ईश्वर पर विश्वास कर उसे स्मरण रखते हैं तो हमें बुद्धि, मन को शान्ति व दुख सहन करने की शक्ति मिलती है जो कि दुख को कम कर देती है, रास्ता दिखाती है और निराशा से आशा की और ले जाती है।

Even when storm howls, darkness becomes deeper; His light will continue to shine on us. We need to keep in mind that He is nearer to us than our heartbeats and closer to us than our breath.

पथिक जी का यह सुन्दर भजन इस भावना को बता रहा है।

भरोसा कर तू ईश्वर पर तुझे धोखा नहीं होगा ।
यह जीवन बीत जायेगा तुझे रोना नहीं होगा ।।
कहीं सुख है, कहीं दुख है, यह जीवन धूप छाया है।
हसीं में ही बिता डालो बितानी ही यह माया है।।
जो सुख आये तो हंस लेना, जो दुख आये तो सह लेना।
न कहना कुछ कभी जग से, प्रभु से ही तू कह लेना।।
ये कुछ भी तो नहीं जग में, तेरी बस कर्म की माया।
तू खुद ही धूप में बैठा, दिखे निज रूप की माया।।
कहां यह था, कहां तू था, कभी तू सोच रे बन्दे।
झुका कर सीस को कह दे, प्रभु बन्दे, प्रभु बन्दे।।

ईश्वर पर भरोसा होना एक बहुत बड़ी उपल्बधी है। पर यह आसानी से नहीं प्राप्त होती। इस के लिये ध्यान, तप और अभ्यास की आवयश्यकता है। Tkk भी मनु"य इस धरती पर आया है उस की हालत सदैव एक तरह नहीं रहती कभी खुशियां हैं तो कभी गम, कभी उतार है तो कभी चढ़ाव। ऐसे में ज़रूरी है कि मनुष्य उस शक्ति को माने जिसे ईश्वर कहा गया है वरना समय पर आने वाली चुनोतीयों का मनु"य सफलता से सामना नहीं कर पाता। ईश्वर से जुड़ने का सब से उतम उपाय ईश्वर का ध्यान है जिसे हम ब्रहम यझ भी कहते हैं। ईश्वर पर पूर्ण भरोसा, ईश्वरीय गुणों कां धारण करना ही ईश्वर का ध्यान व भक्ति है। इससे जो अध्यात्मिक शक्ति मिलती है उसके आगे सब दैत्य शक्तियां पराजित हो जाती हैं।

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 100 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE **अवश्य दे**
2. **आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–**
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, ICICI Bank - 659201411714, **IFC Code - ICIC0006592**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

;fn vki cd e tek ugh djok ldr rk
di;k **at par** dk pd Hkt nA

Editorial

वस्तु का प्रयोग ही उसका आदर है

बुद्धिमान कहते हैं हर एक वस्तु का प्रयोग होना चाहिये। वस्तु का प्रयोग ही उसका आदर है। इस के विपरीत जब हम सब साधन जुटाकर वस्तु को बनाते है पर उसका प्रयोग नहीं करते या फिर आंशिक रूप से करते हैं तो वस्तु का अनादर है। यह बात भारत जैसे देश के लिये और भी खरी उतरती हैं जहां जनसंखया के अनुपात में साधनों की कमी है। वैसे तो शुरू से ही मनु"य की मानसिकता यही रही है कि हर एक वस्तु का जहां तक सम्भव है, प्रयोग किया जाये। आप तरह तरह के मसाले, ओ"धियां, अनाज देखतें हैं वे इसी मानसिकता को दर्शाते है। जहां गेंहू के अन्दर के भाग का प्रयोग आटा और मैदा बनाने मे लिया जाता है वहीं छिलके का प्रयोग उर्जा बनाने के लिये किया जा रहा है। यही नहीं हर एक स्थान पर, ज़रूरत के अनुरूप, अलग अलग तरह से प्रयोग किया जाता है। एक चीज जो खुलकर सामने आती है वह यह है कि व्यक्ति किसी चीज को भी फेंकने से पहले प्रयोग में लाने की पूरी कोशिश करता है। इस बारे में उसने पशुओं को भी नहीं छोड़ा। पहले दूध पीता है और जब मर जाते हैं तो उनकी खाल का प्रयोग जूते बनाने के लिये किया जाता है। यही नहीं अव यह सोच भी आ गई है कि मानव के शरीर को भी मृत्यु के उपरान्त जलाने या दफनाने के स्थान पर प्रयोग किया जाये। मानव के उपयोगी अंग जैसे आखें आदि दूसरों की आंखों में रोशनी दे रहे हैं। बहुत से व्यक्ति अपने शरीर को मृत्यु के उपरान्त अन्वे".k d¡ लिये pledge कर रहे हैं। हर वस्तु के प्रयोग की कोशिश करना एक अच्छी सोच है।

जहां मानव एक और तो इतना समझदार है वहीं उसकी दूसरी तस्वीर भी उभर कर आ रही हA हर शहर में धर्म, जाति साम्प्रर्दाय के नाम पर बड़े बड़े भवन खड़े किये गये हैं या वहुत सारी भूमी खरीद कर रख ली गई है। बहुत सारे इन भवनो का या तो आंशिक प्रयोग है या फिर बिल्कुल कोई प्रयोग नही। ताले लगे रहते हैं या फिर हफते या महिने बाद एक घंटें के लिये खोल दिये जाते हैं। आप ही के शहर में जहां ज़मीन की कीमत एक लाख रूपये प्रति गज से भी उपर है, ऐसे भी भवन हैं जिनकी कीमत 50–100 करोड़ है और पूरे साल में मुश्किल से दो तीन दिन के लिये किसी सालाना उत्सव पर उनका प्रयोग होता है। प्रयोग तो कुछ नहीं पर हज़ारों रूप्ये रंग रोगन maintenance और सफेदी पर खर्च कर दिये जातें है। सच यह है कि यह देख कर दिल में खुश रहते हैं कि करोड़ो की जायदाद पड़ी हुई है। इसका एक और पहलू भी देखिये। यह सभी भवन अच्छे दानी लोगों के दान द्वारा बनते हैं।

उन महान आत्माओं ने भवन के लिये दान इस लिये तो नहीं दिया होगा कि इस का प्रयोग न हो। यह दान में आये धन का दुप्रयोग है व उनके साथ धोखा है। खास कर यह देखते हुये कि हमारे देश की बढ़ती हुई जन्संख्या में बच्चों की पढ़ाई के लिये भवन नहीं हैं। रोगियों के लिये अस्पताल नहीं हैं और जो रोगियों के साथ उनके ईलाज के लिये आते है उनको खुले में सोना पढ़ता है। घर से सताये बूढों के लिये वृद्ध आश्रम नहीं है।

केवल भवन की ही बात नहीं। बहुत कुछ और देखने को मिलता है। दानियों ने बर्तनों के सैट तो संस्थाओं को दान में दे दिये पर वे सालों से वैसे पड़े हैं, क्योंकि अधिकारी वर्ग में सेवा की भावना ही नहीं है। गददे तो दान में लेते हुये बहुत खुश होते है बढ़ चढ़ कर नाम की भी घोषणा करते हैं पर प्रयोग तो तब हो जब इन पर बैठने वाला कोई हो। कमरे तो बनवा लिये हैं पर बन्द रहते है इसके बावजूद कोशिश यह रहती है एक और कमरे के लिये मरने से पहले कोई दान दे जायें।

एक सोच की आवश्यकता है। यदि हम यब साधन बना कर

भी उनका प्रयोग नहीं करते हैं या होने नहीं देते तो यह उन वस्तुओं का अनादर है व जिन दानी महानुभावों ने इसके लिये दान दिया था उनके साथ बहुत बड़ा धोखा है और आप प्रबन्धक के तौर पर पाप के भोगी है।

इसका समाधान है। अभी हाल ही में मैं राजकोट गुजरात में मैं पैदल ही एक museum को ढूंड रहा था तभी गलती से मैं किसी दूसरे भवन में चला गया। पूछा कि यह क्या है? तो वहां बैठे हुए सज्जन ने बताया कि यह भवन किसी धार्मिक समाज के लोगों ने बनाया Fkk पर जब समाज में आने वालों की संख्या बहुत घट गई तो trust के सदस्यों ने इसके अच्छे प्रयोग के लिये सोचना शुरू कर दिया। पास ही एक बड़ा अस्पताल है जहां दूर दूर से लोग अपना या परिवार जनों का ईलाज करवाने आते हैं। रोगी को तो जगह मिल जाती है पर जो व्यक्ति उसके साथ होते थे उन्हें बहुत मुश्किल होती थी। होटलों में रहना सब के बस का नहीं। ऐसे में हमने निर्णय लिया कि जो रोगियों के साथ आते हैं उनके रहने के लिये 100 कमरे व खाने की mess cuk nh tk;sA vkt हम एक कमरा 100 रूप्या प्रति दिन के हिसाब से देते है(गरीबों से वह भी नही लिया जाता) और 5 रू में खाना देते हैं। मन बहुत प्रसन्न हुआ। यह है किसी वस्तु का ठीक प्रयोग। यही नहीं प्रबन्धक ने बताया कि अब दान पहले से कहीं अधिक आता है।

मानव जाति का उपकार करना सब समाजों का उदेश्य है। पर यह बात अमल में तभी आ सकती है, अगर हम इस पर सोचें। हां इन कार्यों के लिये सिर्फ पैसा ही नहीं चाहिये बल्कि उदार हृदय होना चाहिये, वासुदैव कुटुम्बकम ——सारा संसार एक परिवार है, की भावना होनी चाहिये और सब से बड़ी बात सेवा की भावना होनी चाहिये, दया सेवा, करूणा और संवेदनशीलता जैसे गुण अधिकारी वर्ग में होना आवश्यक हैं। पर मुश्किल यह है कि जिन्हे हमने उपर बिठाया होता है उनका नाम ही होता है उन में न यह गुण होते हैं न समय। उन्हें अपने कामों सें ही फुर्सत नहीं होती। वैसे तो ऐसे अधिकारीयों को स्वयं ही पद छोड़ देने चाहिये और ऐसे व्यक्तियों को काम करने दें, जो मननशील हैं और समय दे सकते हैं।

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values'

df'pr /khj%

mifu"kn dgrs gSa fgEerh ykx ogh gSa tks orZeku ds fy;s thrs gSa vkSj dk;Z o gSa tks Hkfo"; dh fpUrk ds dkj.k ge'kk n[kh jgrs gSaA cgqr ls ykx thou dk vkuUn blfy, ugha mBk ikrs] D;kfd os ge'kk Hkfo"; dh fpUrk ds dkj.k n[kh jgrs gSaA ;g mlh rjg gS tSls fd vxj ge viuh Nk;k dks idMus dh dksf'k'k djrs gSa rks vkxs c<us ij Nk;k Hkh vkxs cMs tkrh gSA blh izdkj gekjk lEiw.kZ thou 0;FkZ dk l?k"kZ cu dj jg tkrk gSA
orZeku dk vkuUn ge mBkrs ugha gSa o Hkfo"; dh fpUrk ls viuk vki dks ?kjs j[krs gSA

Truth is like oil in water. No matter how much water you add to depress it, it always floats on top

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab
Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465
Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

Editorial

History has not seen a man who could reshape so many minds

If one asks me what has been Modi's biggest achievement, my answer is: "He could reshape the opinion of billions in a short span of one year." The quantum of change in people's perception about him is unprecedented, at least in the history of free India, especially when one takes in to account the fact that he remained under relentless attacks from his adversaries which includes powerful Indian media, backed up by our self styled intellectual brigade who suffer from selective perception and stunted vision, leading to nonstop scrutiny of his actions by various courts in the country including the Apex Court. . Any other man in his place would have been out of the political scene long back. Today if he has been able to tear apart the devil's mask put on him by his adversaries; it is a compliment to his stamina, fighting spirit, hard work, highly successful track record in the matter of governance & development and above all ability to survive when all odds were stacked against him. No wonder now he has emerged as the first choice for country's top job according to various surveys and opinion polls. What is most remarkable that clamour to see him as PM is not only confined to the people of the states where BJP has a traditional following but it is making a pitch even in those states like Tamil Nadu, West Bengal and Kerala where BJP never had any presence. This marvellous feat of Mr. Modi is all the more significant when we consider that India is a country inhabited by more than a billion people with wide cultural, linguistic and religious disparities, which probably one may not find anywhere else in the world. For example Hindus though make about 80% of country's population, have more than 100 sects. Till a year back his own party was hesitant to project him as the PM. The senior leaders, who called shots in the last two decades, were deadly against him and a few of them had their own Prime Ministerial ambitions also. But by the time announcement of Prime Ministerial candidate was to be made every body fell in line. It is not a small achievement considering that his main rival in the party, L.K. Advani is widely regarded as the main architect of BJP.

Now I come to media. People say media can make or mar the political career of any aspirant. But, he unsettled this axiom. Our media especially English press, backed up by self styled intellectual brigade, ran a vociferous and highly vilifying campaign to see him behind the bars almost for a decade. They had thought that a lie spoken hundred times becomes a truth but then truth like oil in water comes on surface no matter how much water you may add to depress it. Fact is that he was the most hated politician for them. But now even they are convinced that his place is not in Jail but at 7 Race course.

A year ago when JD(U) parted ways in protest against Modi's projection for country' top job, NDA was left with only one ally in SAD. General feeling was that NDA would be untouchable with Modi at the helm but today NDA

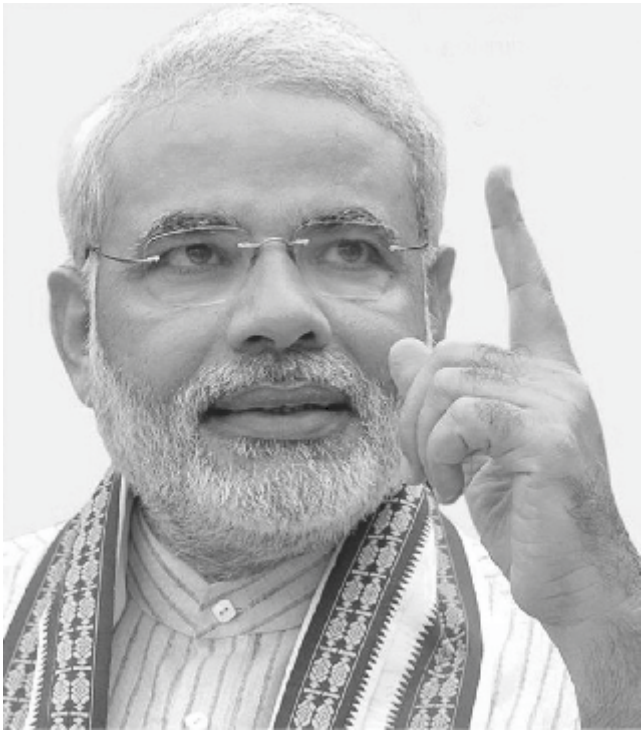

has 25 allies and others who matter have kept their options open. Take the caseof TDP, Chander Babu Naidu had parted ways in 2002 only because BJPleadership did not relent on his demand to throw Modi out. Today the same man has not only shared dais but wants to use his name to come out of the political exile in Andhra.

BJP in last 34 years of its existence though had has very outstanding and popular leaders in Atal Bihari Vajpayee, L.K Advani and many others but, it failed to make its presence in half of the Indian states and especially in deep South it always had a blind spot.. It is the first time that one is hearing Modi chant in all the states of India.

Lastly, till now we had always seen political parties riding on the popularity of Bollywood stars. It is the first time that even Bollywood stars are pleading Mr. Modi to come for Road show and rallies in their constituencies. Indeed a celebrity of celebrities!

They say God is with him but I say God is with India Who sent him on the scene to save the country of last five years misrule in which country touched abysmal lows in all the areas. Indeed in today's context, Narendra Bhai Modi is a phenomenon and all I can say that history has not seen a man like him who could reshape minds of so many in such a short span. But then he richly deserved it. No one in the present breed of politicians has the passion, commitment and spirit of sacrifice for a bigger cause, what Modi has displayed in plenty.

मोदी और उनकी पत्नि जसोदाबेन के विवाहित सम्बन्ध को वही समझ सकते हैं जो योग का अर्थ जानते हों

जसोदाबेन

चित को उसकी वृतियों से अलग करने का नाम योग है। जब आप अपने चित को मन की वृतियों से अलग कर लेगें तो अपने स्वरूप में स्थिर हो जायेगे और आपका मन किसी बड़े उदेश्य के लिये निर्विघन काम कर सकता है और आपकी सफलता निश्चित है। ऐसा आत्म संयम ही योग है।

गोपाल कृष्ण गोखले

मोदी और उनकी पत्नि जसोदाबेन ऐसा करने वाले पहले नहीं हैं। हमारे स्वतन्त्रता संग्राम युद्ध में सेंकड़ो ऐसे थे जिन्होने देश को स्वतन्त्र करवाने के लिये योगी का जीवन जीया। कहते हैं कि मांडले की जेल में जब महान स्वतन्त्रता सेनानी गोपाल कृ"ण गोखले को जेलर ने उनकी पत्नि की मृत्यु की खबर का तार दिया तो गोखले ने उसको पढ़ा और अपने काम में लग गये। अग्रेज़ जेलर हैरान था, उससे रहा न गया और गोखले से बोला–––मैने आप जैसा पत्थर दिल इन्सान नहीं देखा जो कि अपनी पत्नि की मृत्यु पर एक आंसु तक न बहा बहाये। गोखले ने जबाव दिया––जेलर महोदय यह नहीं कि मुझे अपनी पत्नि से प्यार नहीं है, पर ये आंखे भारत मां के लिये इतने आंसु बहा चुकी हैं कि अब इन में आंसु रहे ही नहीं हैं। हमारे स्वतन्त्रता संग्राम युद्ध में सेंकड़ो ही ऐसे योगी थे जिन्होने घर और पत्नि का सुख, बड़े उदेश्य के लिये त्याग दिया।

अगर दिगविजय जैसे कांग्रेस के नेता मोदी और उनकी पत्नि जसोदाबेन के विवाहित सम्वन्ध का मजाक उड़ायें तो हैरानगी नही होनी चाहिये। वह व्यक्ति योग को क्या जाने जो कि 68 साल की आयु से 25 वर्ष छोटी अपनी प्रमिका से दूसरी शादी करे।

पर भारत की संस्कृति तप त्याग की रही है। कोन नहीं जानता रामायण युग में लक्ष्मण अपनी पत्नि और घर के सुखों का त्याग कर श्री राम के साथ, उनके रोकने पर भी, 14 व"k dh fy;s cuokl जाना अपना कर्तव्य समझते है।

0;ogkfjd vkn'k lU;klh

Ekgf"k दयानंद सरस्वती जी के प्रवचन से प्रभावित होकर भावुकता में एक व्यक्ति ने अपनी समंपति बेचकर egf"k के चरणों में दस हजार रूप्ये वेद प्रचार के लिए समर्पित कर दिये। egf"k ने कहा––––तुम्हारी गृहस्थी उजाड़कर मैं वेद प्रचार कैसे कर सकता हूं। एक हज़ार रूपये दान में लेकर बाकी के नौ हज़ार रूप्ये वापस उस गृहस्थ को लौटा दिये।

यह घटना तीन बाते उजागर करती हैं। एक, egf"k कितने व्यवहारिक थे। दूसरा, वह गृहस्थ को कितना महत्व देते थे। तीसरा, लोभ उन से कोसों दूर था। ऐसा व्यक्ति ही गुरू बनाने योग्य है।

Publisher & Printer Bhartendu Sood **Printed at** Amit Arts 36 MW Industrial Area, Ph-I, Chandigarh 9216504644
Owner Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

धारणा बनाने से पहले करें थ्री फिलटर टेस्ट

प्राचीन युनान में सुकरात को महाज्ञानी माना जाता था। एक दिन उनकी जान पहचान का व्यक्ति उन से मिला और बोला,––'' क्या आप जानते हैं मैने आपके एक दोस्त के बारे में क्या सुना है? सुकरात ने कहा––'' तुम्हारे कुछ कहने से पहले मैं चाहता हूं कि तुम एक छोटा सा टैस्ट पास करो। इसे triple fQYVj VLV dgr: gSA

इससे पहले कि तुम मेरे दोस्त के बारे में कुछ बताओ, अच्छा होगा कि हम कुछ समय लें और जो तुम कहने जा रहे हो उसे फिल्टर कर लें। इसी लिये इसे मैं triple फिल्टर टैस्ट कहता हूं। पहला फिल्टर टैस्ट है सत्य। क्या तुम पूरी तरह आश्वस्त हो कि जो तुम कहने जा रहे हो बह सत्य है?

व्यक्ति बोला ––'' दरअसल यह मैने किसी से सुना है।'' सुकरीत ने कहा––' तो तुम यह विश्वास के साथ नहीं कह सकते कि यह सत्य है या असत्य।

चलो अब दूसरा फिलटर टैस्ट करते है। मुझे बताओ कि जो तुम मेरे दोस्त के बारे में बताने जा रहे हो क्या वह कुछ अच्छा है। व्यक्ति बोला––सच्चाई यह है कि जो मैं बताने जा रहां हूं वह बुरा ही है। सुकरात ने सुना तो बोला–– तो मैं समझुं कि जो तुम मुझे बताने जा रहे हो वह बुरा तो है पर उसके बारे में तुम आश्वस्त नहीं हो। कोई बात नहीं अभी एक और टैस्ट बचा है। अगर तुम उसे ही पास कर लो तब भी मैं तुम्हारी बात सुन लूंगा। जो तुम मेरे दोस्त के बारे में बताने जा रहे हो क्या वह मेरे लिये उपयोगी है। व्यक्ति ने जवाब दिया––नहीं कोई खास नहीं। सुकरात बोले––'' जो तुम बताने जा रहे हो, वह न तो सत्य है, न अच्छा और न ही उपयोगी। तो उसे सुनने का क्या लाभ? और यह कहते हुये वह अपने काम में व्यस्त हो गये।

यूनान के महान दार्शनिक सुकरात की थ्री फिल्टर थ्योरी जिसे (सच्चाई, अच्छाई और कमाई) की थ्योरी कहा जाता हे हमसब पर लागू होती है। कई बार हम दूसरोंकी सुनी सुनाई बातों पर आंख मूंद कर यकीन कर लेते हैं और उसे ही सच्च मान बैठते है। जो हम ने सुना है, वह अच्छा है या बुरा, इसकी भी परवाह नहीं करते। इतना ही नहीं इस प्रकार की बातों को सुनने में हम अपना वक्त भी जाया करते हैं। जबकि, हमें इसमें कोई लाभ नहीं होता है। सुकरात का कहना था कि हमउन लोगों की बातों को क्यों सुने जिन्हे खुद ही सच्चई का पता नहीं होता। उन्हें यह भी पता नहीं होता कि उसे बताने में सामने वाले को कोई लाभ होगा या नहीं। उसी तरह हमें दूसरे की चुगली करने से बचना चाहिये। हम उस व्यक्ति की तरह न बने, जो सुकरात से उनके दोस्त की बुराई करने आया था। असलियत जाने बिना कई बार हम हम किसी की बुराई को आग की तरह फैलाते हैं। वही कई बार किसी की अच्छाई जानने के बाद भी हम अपने तक सीमित रख सकते हैं। हो सकता है कि हमने जिस अच्छाई के बारे में सुन रखा है उसे बताने में किसी का भला हो जाए। इस तरह की बातों को जिसमें दूसरे की भलाई छिपी है उसे ज़रूर ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाना चाहिए ताकि अधिक से अधिक लोगों का इस में फायदा हों

वर की आवश्यकता

45 वर्"k;] l|Unj] 'okr o.k dh lin dU;k] cgr gkugkj] 'kkdkgkjh] d fy;s oj dh vko';drk gSA 13 व"k igys 'kknh gbZ Fkh ij consummate ugh gbZ] mld ckn dU;k us viuh fo/kok ekrk dh lsok esa gh thou dkVus dk fu'p; fd;k ijUrq mldh ek mldh 'kknh esa gh viuh eqDrh le>rh gSA
dU;k electronics Engineering es diploma, Central Govt job es pMhx< es dk;Zjr gS 40000 ds djho ekfld osru gSA Pensionable job, dkj bR;knh lc lqfo/kk,s gSA

कुपया सम्पर्क करें 92179703 81 वैदिक थोटस

Prayer is a language of heart

Bhartendu Sood

There is a mythological but highly educative story by Leo Tolstoy. A priest engaged in preaching the teachings of Bible would move places with his team of preachers. Once during the sea voyage they spotted a small island. "There must be people staying here. We must reach out to them" the highly spirited priest said to his men and they halted there.

After they had made inroads in island, they saw a group of men who looked to be from the Stone Age with their torso covered with barks of tree. Soon the priest could know that the island had a small population and they knew nothing about the outside world. After some time, the priest came to the real point, "Do you ever pray to God?" he asked. "When we need something we sit, raise our hands towards the sky and make supplication." They said.

"Oh, you need to be told how to pray" said the priest. He along with his team stayed for a fortnight and taught the habitants the prayer and method of praying. Thinking that enough was taught to them they departed for further voyage.

Hardly their ship had moved a few miles; they saw three of them coming to them, running on the sea water. Surprised, the priest stopped the ship and asked them what had happened. "Holy man, we forgot the prayer you had taught, teach us again" they replied

apologetically. Still in awe, the priest said "Surely, but first tell me how you were running on the water"

"Holy man, if you remember, we had told you in our first meeting that whenever we needed something we raised our hands towards the sky and asked for wishes and they were granted. We wanted to reach you so we raised our hands and said---"We want to meet the priest but we don't have any boat. Please help us." There was an instant intuitive response, a voice from inside-----"you walk". This is how we have reached you. Aghast & bewildered, the priest looked at them with awe and said, "You continue to pray as you were doing earlier, you don't need my guidance and method of prayer"

True, prayer is a matter of cosmic link. It has nothing to do with the words, language or method of prayer. True prayer comes deep from the heart and not from the lips and God understands it. It is a fallacy that communion with God is possible only in some particular language or by performing rituals in the prescribed manner as the general impression is sought to be created, in many cases by the selfish interests. Doctrine or philosophy has no language and it holds true for religious doctrine too. It is a highly misplaced notion that God accepts supplications in some particular language which is termed as a divine language. Therefore, when any person links his religious doctrine with any particular language, it is more a reflection of his love for the language than his reverence for the philosophy.

To say or accept the notion that when the priest chants shalokas or hymns only in Sanskrit or in some other specified language, the message reaches the *devas* or God, is nothing but a superstitious belief which fails to withstand sound reasoning. Unless the person understands what prayer he is making, it can not bring the desired reward to him. As the food imparts vitality and nourishment to the one who eats it, in the same fashion, prayer has to be made by self. Prayer made by a priest on our behalf can never bring desired fruit to us.

The hymns in our Vedas speak of good of all men, creatures and everything on this planet without any regard to origin, race, religion, language and sex. These carry message for entire humanity. But when we link it some language we restrict its reach because no language in the world, not even English, is universally spoken. By linking Vedas to Sanskrit, we confined it to a selected few and did great injustice to this great philosophy considering that in this country of 1400 million population there are few thousands who can understand Sanskrit. It is for this reason that a great social reformer Mahatma Phule had strongly opposed the use of Sanskrit during ceremonies like marriage. He opined that of what good that chanting of hymns was if the bride and groom did not understand what vows they were taking. Since then in Maharshtra ceremony is performed in the local language.

We will do well to allow Vedas to be evolved for the benefit of entire humanity but it is possible when we don't link it with any particular language and people embrace the values and message of Vedic hymns in their mother tongue. Essence is ----- Prayer, trust and belief in a Creator is a treasure that is open to all men, in all places and in all languages. He responds to our feelings and knows all languages

प्यार से बहू भी अपनी पुत्री बन जाती है

ऐम ऐस टंडन

मेरे एक मित्र नवीन अपनी पत्नि, इकलोते पुत्र जय और उसकी पत्नि शैली के साथ नोएडा में बहुत सुख का जीवन जी रहे थे। बदकिस्मती से जय की मृत्यु एक दुर्घटना में हो गई। वृद्धावस्था में अब उनकी बहु शैली ही उनके जीवन का सहारा थी। शैली प्यार और पूरी तन्मयता के साथ बूढ़े सास ससुर की सेवा करती थी परिणाम स्वरूप दोनो ही बेटे को खोने के दुख से शीघ्र ही काफी हद तक उभर कर सामान्य जीवन में वापिस आ गये।

इस तरह तीन साल बीत गये। शैली अभी बिलकुल जवान थी। दोनो अपनी बहू की ऐसी हालत देख कर दुखी होते। उनको ऐसा लगता जैसे उनकी अपनी बेटी अभी कुंवारी है। दोनो ने शैली को दूसरी शादी के लिये प्रेरित करना शुरू कर दिया और जब बात ऐसे न बनी तो दबाव डालना प्रारम्भ कर दिया। आखिर शैली ने उनकी बात मान ली और एक अच्छा वर देख कर बहुत सादे ढंग से उसकी दूसरी शादी कर दी अव शैली अपने ससुराल में थी।

शादी के बाद, एक दिन नवीन अपने बैंक पास बुक में ऐंटरी करवाने गये तो उनकी हैरानगी की कोई सीमा नहीं रही जब उन्होने देखा उनके खाते में 10 लाख रूप्ये आये हुये थे। मैनेजर से पुछा तो पता लगा कि यह पैसा श्शैली के खाते से उसकी शादी के दो दिन पहले आये थे। उसी वक्त उन्होने शैली से फोन पर पूछा। शैली ने जो कहा वह कुछ इस तरह था––'' बाबू जी, जय की मृत्यु के पश्चात मैने यह सोच लिया था कि मैं एक पुत्री की तरह आप दोनो की जीवन भर सेवा करूंगी। परन्तु जब आपके आग्रह को मैं टाल न सकी तो जो 10 लाख की रकम जय की मृत्यु के पश्चात मुझे इंशोरैंस कलेम के रूप में मुझे मिली थी मैने अपने होने वाले पति से बात कर, आप के खाते में डाल दी ताकी इस वृद्धावस्था में आपको किसी तरह कि आर्थिक मुश्किल का सामना न करना पड़े। जहां तक मेरा सवाल है, आपने अपनी सूझबूझ से मेरा जीवन फिर से फूलों की सेज बना दिया है।'' नवीन और उनकी पत्नि की आखें में अश्रूधारा बह रही थी पर यह उनके प्यार का ही जादू था। सचमुच प्यार में बहुत शक्ति है आपका प्यार आपकी बहू को भी अपनी पुत्री बना सकता है

मंजर भोपाली ने कहा है––'' कभी बेटियों के लिये भी हाथ उठाओ मंजरं। अल्लाह से सिर्फ बेटा नहीं मांगा करते।''

*****

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगडी, कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :

HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh

Tel.: 0172-2708497

दोष-दर्शन

स्वामी सत्यपति परिव्राजक

१. व्यक्ति को प्राय: अन्यों के दोष देखने और उन्हें दूसरों को बताने में सुख मिलता है तथा दोष देखते–देखते व्यक्ति का स्वभाव इतना बिगड़ जाता है कि वह केवल दोष ही देखना प्रारम्भ कर देता है। इससे उसकी आध्यात्मिक उन्नति रुक जाती है।

२. जो वास्तव में योगाभ्यासी है उसे अपने में ही इतने दोष दिखाई देते हैं कि उन दोषों को जानने; उनको दूर करने के लिए जो उपाय, प्रयत्न किए जाते हैं उन उपायों, प्रयत्नों का प्रयोग करते हुए अन्य दोष दर्शन का अवकाश ही नहीं मिलता।

३. योगाभ्यासी के मन में केवल यही इच्छा रहती है कि मुझे ईश्वर प्राप्ति की योग्यता बनानी है। उसे अपने दोषों को जानने, उनको दूर करने के लिए उपाय, प्रयत्न करने का इतना कार्य होता है कि मन पर पूर्ण रूप से नियन्त्रण, मौन, गम्भीर, अन्त: वृत्तिक बनना पड़ता है। यदि वह इस प्रकार के हानिकारक और अनावश्यक विचारों और वस्तुओं का संग्रह करता रहे तो उन सूक्ष्म विषयों को जान नहीं सकता और इसके संग्रह से स्वयं को क्लेशों से पिसता हुआ भी देखता है। इसलिए कहा जाता है कि योगाभ्यासी को तो किसी से भी कोई शिकायत ही नहीं रहती। वह तो केवल अपनी उन्नति हेतु दोषों को दूर करने में लगा रहता है।

४. सामनेवाला यदि दोष करता है तो योगाभ्यासी सोचता है कि यह मेरा तो कुछ बिगाड़ ही नहीं रहा है। ईश्वर की सृष्टि है। यदि सामने वाला दोष करेगा तो ईश्वर ही न्याय करेगा। मुझे उससे कोई प्रयोजन नहीं है, मुझे तो केवल अपना कार्य ठीक, व्यवस्थित, सत्य और न्याय के अनुकूल करना है।

५. योगाभ्यासी बौद्धिक दृष्टि से स्वयं को, सामनेवाले को मृत्यु के मुँह में देखता है तो उसे राग, द्वेष, ईर्ष्या आदि करने की बात ही नहीं सूझती। जिसका आध्यात्मिक स्तर इस प्रकार का नहीं है अथवा लौकिक वृत्तियुक्त है, वही इन बातों को सोच सकता है।

६. अपने साथ रहनेवाले को इतना निर्भीक बना देना चाहिए कि वह नि:संकोच हमारा दोष बता दे। दोष बताने पर प्रसन्नता से स्वीकार करके हमें उसका धन्यवाद करना चाहिए, क्योंकि दोष बताकर वह हमारा उपकार कर रहा है। यदि दोष ठीक बताया है तो उसे दूर करें। यदि मिथ्या दोष बताया है तब भी उसे सुन लें व उपेक्षा कर दें।

७. जब तक व्यक्ति पूर्ण रूप से सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में तत्पर नहीं रहता और अत्यन्त पुरुषार्थ नहीं करता तब तक योग मार्ग पर बढ़ सके और ईश्वर प्राप्ति कर सके, ऐसा असम्भव है।

८. यह नियम है कि कोई भी दो व्यक्ति ऐसे नहीं होंगे कि जिनकी बुद्धि शत-प्रतिशत एक जैसी अर्थात् अनुकूल हो इसलिए विरोध होगा ही, तो व्यर्थ है कि हम इसके विपरीत सोचें कि सभी मेरे अनुकूल ही आचरण करें। यह कारण हट जाने पर उपरोक्त दोष भी नहीं आएँगे।

९. यह सारी सृष्टि ईश्वर की है। हमारे पास यह ईश्वर की धरोहर है। हमें अपना कर्तव्य कर्म करते रहना है। उसकी आज्ञा का पालन करना है। दूसरा करे या न करे उसकी ओर ध्यान नहीं देना। हाँ, यदि सामनेवाला जिज्ञासु हो, कुछ सुनना, जानना चाहे तो प्रेमपूर्वक उसे ईश्वर के नियम बता देने चाहिएँ। फिर भी यह इच्छा नहीं रखनी चाहिए कि सामने वाला इन नियमों का पालन करे; ऐसा सोचने पर ही व्यक्ति वितर्कों से बच सकता है, निष्कामकर्मी बन सकता है।

१०. संसार का यह नियम है कि यहाँ अच्छे-बुरे लोग होते ही हैं, इसलिए इस नियम को दृष्टि में रखते हुए, चाहे कोई कितना विरोध करे, दुर्व्यवहार करे परन्तु उसके प्रति ईर्ष्या, द्वेष नहीं करना चाहिए।

११. सामनेवाले से जितनी सहायता मिल रही है तथा जो उसके गुण हैं उनको ग्रहण करो, उनकी प्रशंसा करो इससे उसका उत्साह बढ़ेगा। जो दोष हैं उनकी उपेक्षा कर दो। यदि सामनेवाला दोष सुननेवाला हो और अपनी स्थिति न बिगड़ती हो तो प्रेमपूर्वक, आदरपूर्वक, दूसरे के सुधार के दृष्टिकोण से दोष बता सकते हैं।

१२. जब व्यक्ति समाधि में ईश्वर से सम्बन्ध जोड़ता है तो अविद्या, अज्ञान, अन्याय, विषय–वासनाओं को हेय, त्याज्य, हानिकारक देखता है। जब वह ईश्वर से सम्बन्ध तोड़ देता है तो इनको प्रिय मानकर ग्रहण करता है। यह मापदण्ड है। इससे अपना–अपना परीक्षण कर लेना चाहिए।

१३. सभी जीवात्मा मिलकर अपने ज्ञान, सामर्थ्य, शक्ति से सृष्टि में एक तिल का दाना भी न बना सकते, न पालन कर सकते और न ही विनाश कर सकते हैं ऐसा दृष्ट्री कोण रखना चाहिए।

१४. जब व्यक्ति ऐसा जान-समझकर व्यवहार में लाता है तो उसका सारा मिथ्या अभिमान नष्ट हो जाता है कि मैं तो बहुत कुछ जानता हूँ, गुणवान् हूँ। जिन वस्तुओं से अपना स्वामित्व जोड़ रखा था, वह भी छूट जाता है। वह देखता है कि प्रकृति तो जड़ होने से स्वयं कुछ नहीं कर सकती। एक ईश्वर ही ऐसा है जिसमें इतना शक्ति सामर्थ्य है।

१५. ईश्वर ही प्रकृति के परमाणुओं से सृष्टि बनाता, पालन करता और विनाश भी करता है। ईश्वर के दिए सामर्थ्य, ज्ञान, बल, साधनों से हम कुछ निर्माण, पालन, विनाश करने में समर्थ हो पाते हैं । जब व्यक्ति ऐसा जान लेता है तो ईश्वर उसे अत्यन्त प्रिय लगने लगता है। वह सारी सांसारिक वासनाएँ, विषय–सेवन छोड़ देता है । यह श्रवण,मनन, निदिध्यासन, साक्षात्कार से आनेवाली विद्या है।

१६. यदि व्यक्ति ईश्वर से सम्बद्ध नहीं रहता तो परीक्षण कर सकते हैं कि जैसे ही विरोधी व्यवहार करनेवाली वस्तु सामने आएगी विशेषकर साथ रहने वाला यदि विपरीत व्यवहार करता है तो मन में क्लेश, दु:ख, क्षोभ बना ही रहता है । इधर ईश्वर किसी से क्षोभ नहीं करता, दु:खी क्लेशित नहीं होता जो ईश्वर से सम्बद्ध रहेगा वह भी क्षोभरहित क्लेशरहित होगा। मैत्री, करुणा, मुदिता, उपेक्षा आदि जो उपाय बताए हैं वे योगमार्ग पर दृढ़ करनेवाले हैं।

१७. भले ही आज शाब्दिक विद्वान् हैं लेकिन वे यदि हमें ठीक बता रहे हैं तो भी उनका उपदेश ग्रहण करना चाहिए, चाहे उनका आचरण विपरीत हो अथवा आचरण में कमी हो। किन्तु जो केवल उनके गुणों को न देखकर दोषों को देखता है कि वे स्वयं तो आचरण नहीं करते, दूसरों को उपदेशमात्र देते हैं; वह कभी सीख नहीं सकता। वह विपरीत बुद्धिवाला व्यक्ति है।

१९. जब कोई व्यक्ति विपरीत व्यवहार करता है तो भी मन में क्षोभ उत्पन्न नहीं करना चाहिए, भले ही न्याय की दृष्टि से सामने वाले ने ठीक नहीं किया हो । क्योंकि ईश्वर कभी क्षोभ नहीं करता इसलिए हमें भी क्षोभ नहीं करना चाहिए। ईश्वर जो करता है वही धर्म है, सत्य है यह प्रमाण की प्रथम कसौटी है।

२०. ऋषियों ने भी क्षोभ करने का निषेध किया है, फिर जीवात्मा की पवित्रता, जिज्ञासा, आत्मवत् व्यवहार की दृष्टि से उचित है कि सामनेवाला स्वतन्त्र है, अत: वह अनुकूल भी कर सकता है प्रतिकूल भी कर सकता है परन्तु हमें क्षोभ नहीं करना चाहिए, साथ में यह भी सोचना चाहिए कि सभी की बुद्धि तो एक जैसी नहीं है तो कोई न कोई तो प्रतिकूल व्यवहार करेगा तब क्या हम ऐसे ही दु:खी, क्लेशित, क्षुब्ध होते रहेंगे। इस प्रकार सोचता विचारता व्यक्ति जब ईश्वर से जुड़ता है तो ईश्वर के सान्निध्य से उसे ज्ञान, बल, साहस, पराक्रम, सहनशक्ति की प्राप्ति होती है।

0277 – 287418, 9409415017, दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड, साबरकाण्डा, गुजरात – 3 83 3 07

Speech can make or mar man.

The Kathopanishad says, "A wise man controls speech in his mind." Meaning, do not blurt out all that you think. Think before you speak---Baba Ramdev will do well to remember this. Yoga without self control is nothing more than physical exercise.

पाठकों के पत्र

आपके विचारिक लेंख पढ़ता रहता हूं। ''वेदों के अनुरूप ही हिन्दु धर्म का सम्मान सम्भव है'' लेख विद्वतापूर्ण व समसामयिक है। मेरे विचार में मुख्य समस्या यह है कि लोग पढ़ने के बाद मनन नहीं करते। इसका महत्व नगण्य हो जाता है जब धरातल पर व्यवहारिक रूप से परिवर्तन नज़र नहीं आता। अतः ज़रूरत इस बात की है कि हम इस पर गम्भीरता से सोंचें। हम नरेन्द्र मोदी से कुछ सीख सकते हैं जिन्होने थोंड़े समय में ही करोड़ों के मनो को बदल दिया।

डा दीन दयाल बि"V
District Ay officer(Retd) Proprietor, Dev Bhumi Ayurvedic Pharmacy,
Vice President, Arya Samaj, Solan

जीवन में आनंद के लिए दूसरों को ही नहीं स्वयं को भी छलना ज़रूरी है

सीताराम गुप्ता,

पत्रिका आजकल के अप्रैल 2014 अंक में प्रदीप पंत की एक कहानी पढी। बड़ी अच्छी लगी। रिटायर्ड वृद्ध रामलाल व उनकी पत्नी श्रद्धादेवी अकेले रहते हैं क्योंकि उनका एकमात्र पुत्र गुड्डू अमेरिका में जाकर बस गया है। हर एक–डेढ़ सप्ताह के बाद उसका ख़त ज़रूर आता है जिससे पता चलता है कि वह जल्दी ही अपने माता–पिता को भी वहाँ बुलाने वाला है। ख़त मिलने के बाद श्रद्धादेवी कई दिनों तक हर किसी से अपने बेटे की ही बातें करती रहती है और बहुत ख़ुश नज़र आती है। कुछ दिनों के बाद श्रद्धादेवी की मृत्यु हो जाती है। जब रामलाल से उनके बेटे के बारे में पूछा जाता है तो वो बतलाते हैं कि उनके बेटे ने तो कई वर्ष पहले ही उनसे पूरी तरह से नाता तोड़ लिया है। फिर वो ख़त? रामलाल बतलाते हैं कि बेटा कोई ख़त–वत नहीं लिखता था।

पत्नी दुखी न हो इसलिए रामलाल ने एक तरीक़ा निकाल लिया था। पत्नी को ख़ुश देखने के लिए वह ख़ुद ख़त लिखकर अपने पते पर भेजने का उपक्रम करता रहा था। कहानी का शीर्षक है 'छल'। यहाँ शीर्षक की प्रासंगिकता पर चर्चा करना अभीष्ट नहीं है। कहानी ही नहीं शीर्षक भी अत्यंत उपयुक्त एवं सार्थक है। पर क्या ये वास्तव में छल, धोखा, झूठ अथवा फरेब ही है? अपने प्रियजनों, परिचितों अथवा दूसरे व्यक्तियों को हम प्रसन्न ही देखना चाहते हैं। इसके लिए कई उपाय काम में लाते हैं। इसके लिए हम न केवल उनका खयाल रखते हैं और उनकी देखभाल करते हैं अपितु ऐसे कार्य भी करते हैं जिनसे उन्हें ख़ुशी हासिल होती है।

लोगों का मनोबल ऊँचा बनाए रखने के लिए कई बार कार्य न करने या कम कार्य करने पर भी उनकी प्रशंसा करते हैं। कई बार ग़लत कार्य करने पर भी प्रशंसा करते हैं। कई बार विशम परिस्थितियों में हम अपने प्रियजनों, परिचितों अथवा दूसरे व्यक्तियों को सहायता करने का आश्वासन भी देते हैं जबकि हम सहायता करने की स्थिति में होते भी नहीं और न ही कर पाते हैं। कहा जा सकता है कि सब्ज़बाग़ दिखाना अच्छा नहीं। वास्तव में यह सब्ज़बाग़ दिखाना नहीं अपितु किसी को टूटने से बचाना है। डूबते को तिनके का सहारा भी बहुत होता है। वही उसके लिए महत्त्वपूर्ण हो जाता है। यदि हम कहें कि कहीं तिनका भी डूबने से बचा सकता है पर एक डूबते हुए व्यक्ति से तिनका छीन लें तो यह सबसे बड़ा छल है, धोखा है। सत्य नहीं असत्य है, यथार्थ नहीं प्रवंचना है।

जीवन में सपनों का बहुत महत्त्व होता है। जो सपने देखने का साहस भी नहीं कर सकता वह जीवन में क्या करेगा? कुछ लोग स्वप्नजीवी होते हैं। अपने सपनों के सहारे वो आराम से जीवन गुज़ार लेते हैं। यदि उनसे उनके सपनों को ही छीन लिया जाए तो वो पूरी तरह से टूट जाते हैं। उनका जीवन ही निरर्थक हो जाता है। कई बार जीवन की डोर ही टूट जाती है। कई बार किसी के जीवन की डोर को टूटने से बचाने के लिए आश्वासनों की डोर ही नहीं, स्थूल सत्य का दमन करना भी अनिवार्य हो जाता है। हिमांशु जोशी की कहानी ''साए'' याद आ रही है। एक स्थान पर लिखी है, ''हम दुर्बल होते हुए, असहाय, अकेले होते हुए भी कितने–कितने बीहड़ बनों को पार कर जाते हैं, सहारे की एक अदृश्य डोर के सहारे।''

कई बार किसी घातक बीमारी का पता चलने पर रोगी को प्रायः रोग की वास्तविकता अथवा सत्य से अवगत नहीं कराते ताकि वह मानसिक रूप से भी टूट न जाए। किसी मांगलिक अवसर पर किसी दुखद समाचार को मांगलिक अवसर के संपन्न होने तक रोके रखने में कोई बुराई नहीं। अत्यंत बुज़ुर्ग अथवा मरणासन्न व्यक्ति को कोई दुखद समाचार सुनाकर उसकी पीड़ा को बढ़ाने से अच्छा है सच न बोलना। कई बार किसी अप्रिय सत्य के कारण रंग में भंग ही नहीं पड़ता अपितु सदमे में मौत तक हो जाती है। ऐसे में सत्य का अवलंबन लेना झूठ–फरेब अथवा छल–कपट है या असत्य का अवलंबन लेना यह विचारणीय प्रश्न है। हमारे जीवन में कई बार अनेक छोटी–बड़ी परेशानियाँ अथवा समस्याएँ आ जाती हैं। कई बार भारी आर्थिक नुक़सान हो जाता है।

परेशान करने वाली घटनाओं को हम घर के बच्चों व बुज़ुर्गों से प्रायः छुपा जाते हैं ताकि उन्हें बेकार में चिंता न हो। क्या यहाँ पर इस प्रकार का दुराव–छिपाव छल की श्रेणी में ही आएगा? शायद नहीं। इसके विपरीत कई लोग जीवन में चाहे कुछ भी परेशानी न हो लेकिन घर व बाहर के सभी लोगों को अपनी काल्पनिक परेशानियाँ बता–बताकर उन्हें दुखी करने में कोई क़सर नहीं रख छोड़ते। यदि हम तुलना करें तो पाते हैं कि वो लोग वास्तव में अच्छे हैं जो दूसरों को दुखी न करने के उद्देश्य से सत्य को छुपा जाते हैं अथवा दूसरों की ख़ुशी के लिए असत्य का सहारा लेने से भी पीछे

नहीं हटते।

हमारे जीवन के सुख और दुख प्रायः काल्पनिक ही होते हैं। यदि सुख की कल्पना मात्र से जीवन में प्रसन्नता के कुछ क्षण उपलब्ध हो जाएँ तो छोटा–मोटा तथाकथित छल करने में भी कोई दोश प्रतीत नहीं होता। हाँ, किसी को नीचा दिखाने के लिए, ठगी, चोरी अथवा व्याभिचार के उद्देश्य से या अन्य किसी भी प्रकार से किसी का शोशण करने के लिए किया जाने वाला हर कृत्य न केवल छल–कपट की श्रेणी में आता है अपितु दण्डनीय अपराध की श्रेणी में भी आता है। कहानी छल में लेखक यह भी पूछना चाहता है कि हम अपने प्रियजनों के साथ तो ऐसा सुखद छल कर सकते हैं पर क्या स्वयं के साथ भी ऐसा कर सकते हैं? क्या हम सुखद या मनचाही स्थितियों के लिए स्वयं को विश्वास दिलाकर अपने स्वयं के जीवन को भी अपेक्षाकृत सुखी अथवा आनंदमय बना सकते हैं?

कैलाश–मानसरोवर की यात्रा के दौरान उत्तराखण्ड राज्य में काली नदी के साथ–साथ दुर्गम पर्वतीय मार्ग पर यात्रा हो रही थी। पहले दिन पड़ाव से कुछ ही दूर चले थे कि थकान होने लगी। साथ चल रहे पोर्टर से पूछा कि कितनी दूर और है। उसने कहा कि बस एक घण्टे में पहुँच जाएँगे। एक घण्टा गुज़र जाने पर फिर पूछा कि कितनी दूर और है। उसने बताया कि बस सिर्फ़ आधे घण्टे में पहुँच जाएँगे। एक–दो घण्टे नहीं पूरे छह–सात घण्टे की कठिन चढ़ाई के बाद ही अगले पड़ाव तक पहुँचे। पोर्टर से पूछा कि तुमने झूठ क्यों बोला? ''अरे साहब पहले ही कह देता कि सात–आठ घण्टे लगेंगे तो आप परेशान नहीं हो जाते?'' पोर्टर ने प्रतिप्रश्न के रूप में उत्तर दिया। अच्छा तरीक़ा है परेशानी से बचाने का।

अगले दिन चलने से पहले ही पूछा कि आज कितने घण्टे का सफर है। उसने बताया कि साहब आज रास्ता लंबा तो है पर बहुत आसान है। चढ़ाई कम है और उतराई ज़्यादा है। थकेंगे बिल्कुल नहीं। यह बात भी सच्चाई से परे थी। सब झूठ था जो उसने कहा था पर इसमें किसी का अहित कहाँ छिपा है? मनुश्य की जीवन–यात्रा में अनेक दुर्गम पगडंडियाँ आती हैं जो इन्हीं छोटे–छोटे छलों की सहायता से पार की जा सकती हैं अन्यथा जीवन–यात्रा सचमुच पहाड़ से भी विकट हो जाए।

किसी को प्रसन्न रखने के लिए, किसी को तनाव और बीमारियों से बचाए रखने के लिए, किसी को पुरउम्मीद को बनाए रखने के लिए ऐसे ही किसी छल, झूठ, फरेब या असत्य का सहारा लेते भी हैं जिससे अन्य किसी को कोई कश्ट नहीं होता या हानि नहीं पहुँचती तो वह छल, झूठ, फरेब या असत्य वास्तव में सर्वथा त्याज्य नहीं हो सकता। किसी नेक उद्देश्य से किए गए झूठे वायदे अथवा कोरे आश्वासन या सब्ज़बाग़ भी पूरी तरह से झूठ–फरेब अथवा छल–कपट की श्रेणी में नहीं आते, इसमें संदेह नहीं।

ए डी 106 सी पीतम पुरा दिल्ली – 110034

095555622323

Laughter is the best tranquilizer with NO side effects'

When a man opens the door of his car for his wife, you can be sure of one thing: either the car is new or the wife.

A husband to wife, "Where do you want to go for our anniversary?"

Wife,"Somewhere I have never been!" I told her,

Husband, "How about the kitchen?"

A man placed some flowers on the grave of his dearly parted mother and started back toward his car when his attention was diverted to another man kneeling at a grave. The man seemed to be praying with profound intensity and kept repeating, 'Why did u have to die? Why did you have to die?" The first man approached him and said, "Sir, I don't wish to interfere with your private grief, but this demonstration of pain is more than I've ever seen before. For whom do you mourn so? Deeply? A child? A parent?"

The mourner took a moment to collect himself, then replied "My wife's first husband."

पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।

Honesty is a virtue which is respected everywhere

A successful businessman was growing old and knew it was time to choose a successor to take over the business. Instead of choosing one of his Directors or his children, he decided to do something different. He called all the young executives in his company together.

He said, "It is time for me to step down and choose the next CEO. I have decided to choose one of you. "The young executives were Shocked, but the boss continued. "I am going to give each one of you a SEED today - one very special SEED. I want you to plant the seed, water it, and come back here one year from today with what you have grown from the seed I have given you. I will then judge the plants that you bring, and the one I choose will be the next CEO."

One man, named Jim, was there that day and he, like the others, received a seed. He went home and excitedly, told his wife the story. She helped him get a pot, soil and compost and he planted the seed. Everyday, he would water it and watch to see if it had grown. After about three weeks, some of the other executives began to talk about their seeds and the plants that were beginning to grow.

Jim kept checking his seed, but nothing ever grew Three weeks, four weeks, five weeks went by, still nothing. By now, others were talking about their plants, but Jim didn't have a plant and he felt like a failure. Six months went by -- still nothing in Jim's pot. He just knew he had killed his seed. Everyone else had trees and tall plants, but he had nothing. Jim didn't say anything to his colleagues, however, he just kept watering and fertilizing the soil - He so wanted the seed to grow.

A year finally went by and all the young executives of the company brought their plants to the CEO for inspection. Jim told his wife that he wasn't going to take an empty pot. But she asked him to be honest about what happened. Jim felt sick to his stomach, it was going to be the most embarrassing moment of his life, but he knew his wife was right. He took his empty pot to the board room.

When Jim arrived, he was amazed at the variety of plants grown by the other executives. They were beautiful - in all shapes and sizes. Jim put his empty pot on the floor and many of his colleagues laughed, a few felt sorry for him! When the CEO arrived, he surveyed the room and greeted his young executives. Jim just tried to hide in the back. “Wow, what great plants, trees and flowers you have grown," said the CEO. "Today one of you will be appointed the next CEO!" All of a sudden, the CEO spotted Jim at the back of the room with his empty pot He ordered the Financial Director to bring him to the front. Jim was terrified.. He thought, "The CEO knows I'm a failure! Maybe he will have me fired!" When Jim got to the front, the CEO asked him what had happened to his seed, Jim told him the story. The CEO asked everyone to sit down except Jim. He looked at Jim, and then announced to the young executives, "Behold your next Chief Executive Officer! His name is "Jim!" Jim couldn't believe it. Jim couldn't even grow his seed. "How could he be the new CEO?" the others said. Then the CEO said, "One year ago today, I gave everyone in this room a seed I told you to take the seed, plant it, water it, and bring it back to me today. But I gave you all boiled seeds; they were dead - it was not possible for them to grow. All of you, except Jim, have brought me trees and plants and flowers. When you found that the seed would not grow, you substituted another seed for the one I gave you. Jim was the only one with the courage and honesty to bring me a pot with my seed in it. Therefore, he is the one who will be the new Chief Executive Officer!"

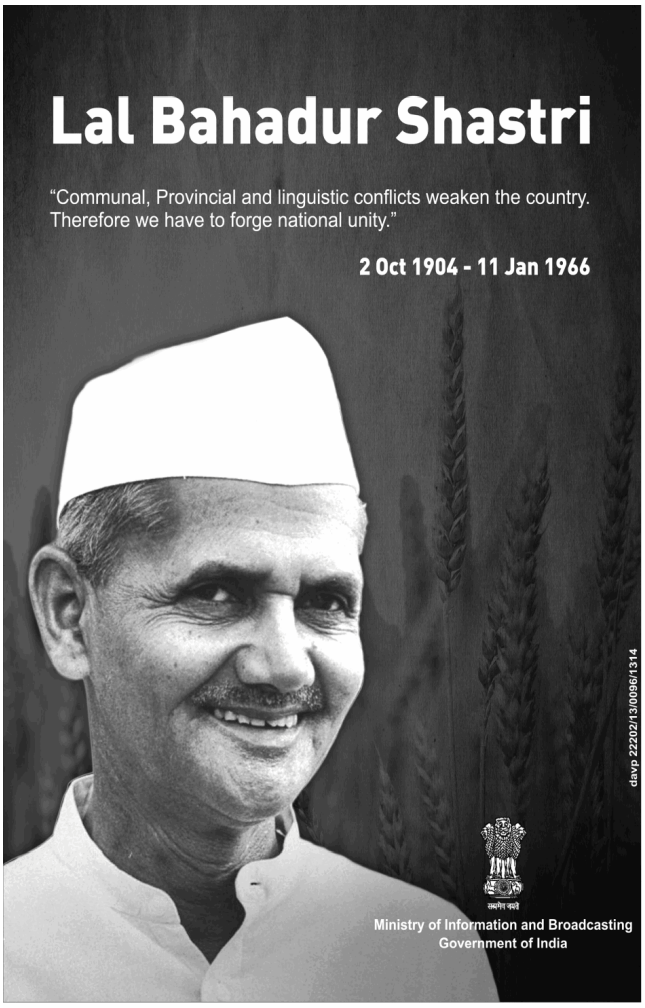

His honest and austere living made him the darling of entire nation. No other Prim Minister commanded so overwhelming respect.

जीवन में सत्संग का बहुत महत्व है

नीला सूद

हम सभी जानते हैं कि हम लोहे की कीलों कों अगर चुम्बक के पास रहने दे ंतो लोहे की कीलों में भी चुम्बकिय गुण आने प्रारम्भ हो जाते हैं। इसी तरह सर्दी में हम जब तपती आग के पास बैठते हैं तो हमारा शरीर गर्म होने लगता है। हम यह भी जानते हैं कि अच्छे फलों की टोकरी में अगर दो तीन फल भी सढ़े हुयें हो तो सारे फल खराब होने का भय रहता है। मनु"; भी इन लोहे की कीलों की तरह ही है। एक अंग्रेजी कहावत के अनुसार व्यक्ति का बहुत कुछ पता उसकी संगती से लग जाता है। एक महान व्यक्ति ने तो यहां तक कहा है ' मुझे बताइए फलां व्यक्ति के सगीं साथी कोन हैं, मैं बता दूगां कि वह व्यक्ति कैसा है। यह मुहावरा– 'कोयले की दलाली में मुहं काला' विल्कुल सत्य है।

जब दो व्यक्ति काफी समय एक साथ बिताते हैं तो वह गुण स्वभाव में एक दूसरे जैसे बन जाते हैं। रामायण मे कैकई जैसी विदुशी भी अपनी सेविका मंथरा के साथ रहते रहते उसकी बांतो से प्रभावित हो कर राजा दशरथ से श्री रामचन्द्र के लिये बनवास मांग लेती है जब कि एक समय वह श्री रामचन्द्र को अपने पुत्र भरत से भी अधिक प्यार करती थी। यह केवल गलत संगती का प्रभाव था । दुर्योधन को अपने धूर्त मामा शकुनी की संगती मिलती है और परिणाम स्वरूपं वैसा ही धूर्त बन जाता है जब कि पाण्डवों को श्री कृ"ण की संगती मिलती है तो वह धर्म युध में विजय प्राप्त करते हैं। कहा जाता है शादी के चालीस पचास साल बाद पति पत्नि की न केवल शकल एक हो जाती है पर अकल यानी कि सोचने का ढंग भी एक हो जाता है। मनु";ों की संगती नालों में बहते हुंए पानी की तरह है। जब नाले एक स्थान पर मिलते है तो नये पानी में दोनों का प्रभाव होता है। इसीलिये हमारे बजूर्ग, बड़े, माता पिता अच्छी संगती में रहने के लिये जोर देते हैं।

सत्संग शब्द का अर्थ है सत्य की संगती। इस में कोई दो राय नहीं कि जो व्यक्ति केवल सत्य के ही नज़दीक रहता है यह हर प्रकार से आन्नदित रहता है व उसका मन शांत रहता है। इसके विरीत जो असत्य की संगती में रहता है वह हर तरह से परेशान रहता है। यहां समझने वाली बात यह है कि सत्संग का साधन केवल अच्छे व्यक्ति की संगत ही नही। सत्संग का साधन अच्छी पुस्तकें और महान आत्माओं के उपदेश भी हैं। अगर हम कहें कि सत्संग अन्धकार से प्रकाश की और ले जाता है तो सत्संग का विल्कुल सही मूल्यांकन होगा। इसी

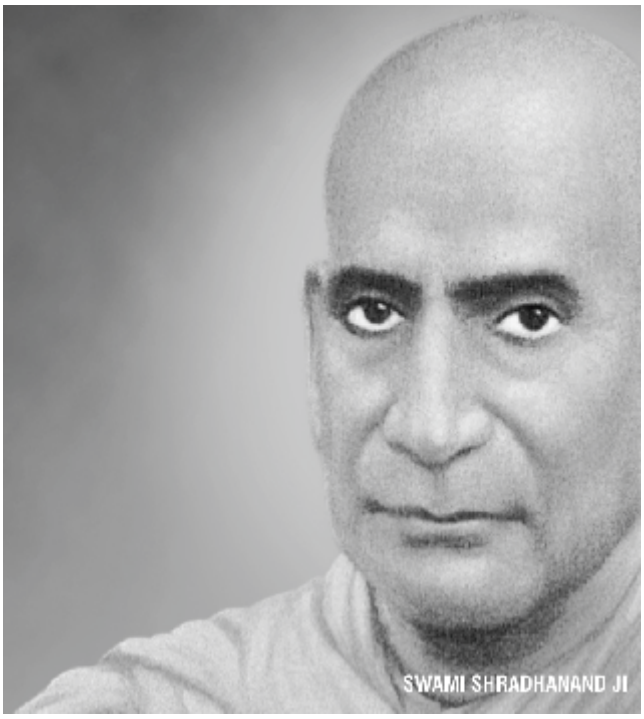

महर्षि दयानन्द के सत्संग ने ही अनेक बुराईयों से भरपूर व्यक्ति मुन्शी राम को महात्मा श्रद्धानन्द बना दिया

प्रकार कुसंग प्रकाश से अंधकार की और ले जाते हैं।

अगला प्रश्न उठता है कि हम अपने बारे में यह कैसे आश्वसत हो ं कि हम सत्संग में ही है। इसे पता करना मुश्किल नहीं। यदि हम प्रसन्न हैं मन शांत है हमारी प्रवृति अच्छे कार्य जैसे दान देना, निश्काम सेवा करना, आपका भला करने वालों का कृतज्ञ होना, दूसरे के अपराधों को भुला देने की क्षमता है, हर प्रकार की हिंसा से मन दूर जाता है, ईश्वर के सनिध्य में मन जाता है और काम, क्रोद्ध, अंहकार, मोह और लोभ से मन दूर भागता है तो निश्चित आप अच्छी संगत अर्थात सत्संग में ही हैं।

वेद के एक मन्त्र में ईश्वर से यह प्रार्थना की गई है––हे ईश्वर ऐसी कृपा करो हम दानी, ध्यानी और आहिंसक बन कर सत्संग करते रहें।

और अगर हम कुसंगत में हैं तो हमारे काम , सोचने का ढ़ग जीवन और संसार के प्रति नाजरिया इसके विपरीत होगा। छलकपट, धूर्तता, दूसरों में बेविश्वासी, क्रोद्ध, अंहकार, मोह और लोभ हमारे चरित्र और व्यवहार के मुख्य अंग हो जाते है।

'The Hare and the Tortoise'

This fable has another great lesson

All of us have read Aesop's fable, 'The Hare and the Tortoise' it is the slow-and-steady tortoise who wins the race against the fast but over-confident hare **But, a twist to an old tale can be a good way of gaining fresh insights.**

Can we not imagine a win-win situation in which there is no contest and both set out towards a pool of fresh, cool water after a hard day's work?

The tortoise sets out early, as it knows its progress is slow. It meanders towards its goal. Though its progress is slow, it is happy that it is also steady. On its way, it enjoys all the beautiful sights that surround it. The hare, in the meantime, has lost no time in rushing towards the pool. It looks neither left nor right, intent on progress. At times, overcome by exhaustion, it flops on the grass with closed eyes; soon it recovers and resumes the journey, exulting in the surge of its limbs and the rush of wind on its face. When it reaches the water, it takes great gulps and then sits back at ease.

It now sees the tortoise come plodding up to the pool to savour the sweet water.

Says the hare, 'Aren't you unhappy about the long journey you made so painfully?' 'No, certainly not,' answers the tortoise. 'What a waste of time,' says the hare. 'No again,' replies the tortoise. 'I enjoyed my time making what you call slow progress.

That's the way I am. You prefer the rush and tumble of things. But then there is nothing to grumble about, is there? We have both enjoyed the cool water and there still enough for both of us!' The moral of this version of the fable is that each manages to achieve his goal, in his own way and in his own time. It is a pointer to the fact that each of us is differently abled, possessing unique talents and abilities. If we recognise them and use them in the right way, we experience true success. Unfortunately, we are often blind to our innate abilities and put ourselves down. We allow feelings of low esteem to tell us that we will not amount to much. They arise from the opinions of

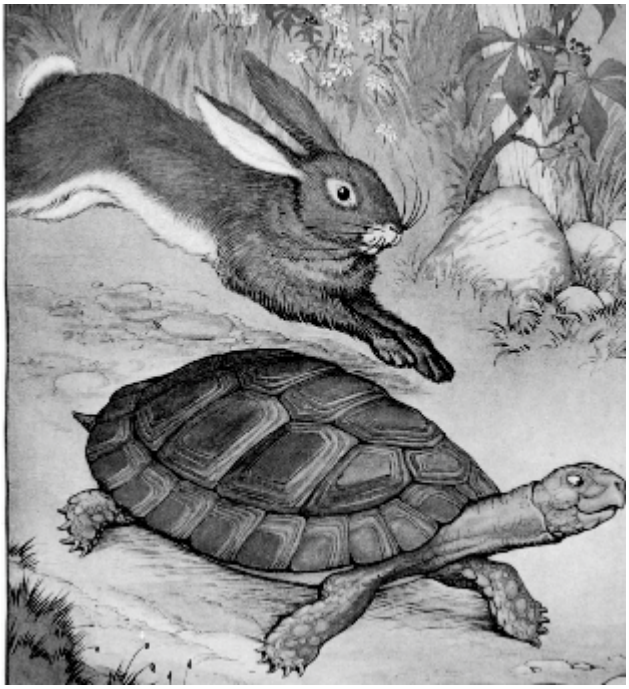

the very people who are close to us, relatives, friends and teachers.

When a person's confidence is undermined, he slips down more .He no longer cares to make use of the special gifts that he is endowed with. He is oblivious to the fact that it takes all sorts to make this variegated world. A winner is after all only one among many other competent rivals and the ruler cannot exist without the ruled. Both the great and the humble have their place in life and a role to play. We should judge ourselves not by what we cannot do but what we can. As these wise words tell us, 'What a little lamp can do, the great sun cannot, that is shine at night.
We are, everyone of us, little lamps.'

*****

पृष्ट 15 'जीवन में सत्संग का बहुत महत्व है' का शेष

इस से एक बात स्पष्ट है कि हम सत्संग में हैं या कुसंगत में यह जानने के लिये हमें दूसरे व्यक्ति से पूछने की आवश्यकता नहीं। हम स्वयं पता लगा सकते हैं। दूसरी बात जो उभर कर आती है कि हम कितने भी ज्ञानी या विद्वान क्यों न हो हमारे लिये व खास कर बच्चों के लिये सगंती व वातावरण का ख्याल रखना बहुत जरूरी है। जब भी आप अपने बच्चे के व्यवहार मे खराब परिवर्तन देखें तो सीधा उसकी संगती पर नजर दोड़ाये। आपको एक ही चीज करनी है वह है उसे सत्संग की और ले जाना।

कुसंग से सत्संग में जाने के तीन साधन है। अच्छा गुरू, अच्छे उपदेश और तीसरा अच्छी पुस्तको का पढ़ना। अन्छा गुरू अपनाने में जलदवाजी न करें। गुरू ठोक बजा कर ही चुने, नहीं मिलता तो कोई बात नहीं। अच्छा उपदेश आपको धार्मिक स्थानो पर जा कर शायद मिल सकता है, पर जो चीज आप आसानी से कर सकते है वह है अच्छी पुस्तको का पढ़ना। पढना आप अपनी आदत बनायें। यह आपकी सोच में चमत्कारी परिवर्तन ला सकती है। **9217970381**

lekt e tM tekrk vU/kfo'okl

bftU;j t-,l lkeUr

fofHkUu lEiznk;k] tkfr;k] /keZ e fofHkUu idkj d vU/kfo'okl O;kIr gA ;s fcuk fdlh ikekf.kdrk d] fcuk fdlh oKkfud vk/kkj d gekj chp e ipfyr gA ge budk blfy; ekurs g fd gekjh fiNyh ihMh budk ekurh vk;h g] D;k vU/kfo'okl ge dk;j rk ugh cuk jgk] blls jk"V de tkj rk ugh gk jgk g bl ij lHkh dk iufopkj dju dh vko';drk gA

fgUn lekt e dN tM ekU;rk; O;kIr g tk ge detkj djrh gA Hkr ir d uke ls cPpk o cMk e ,d vKkr Hk; lekrk jgrk g tcfd Hkr chr le; dk dgr gA tcfd ir fu"ikk.k 'kjhj dk dgr g ;g viu 'kjhj ls dkb gjdr ugh dj ldrkA mlds }kjk fdlh dk Mjku dk rk i'u gh ugh mBrk g mlle r 'kjhj dk ;k rk nQuk;k tkuk gh ;k vfXu dk lefir dj vUrf"B de fd;k tkuk g] ir uke ls dkYifud Hk; ink ugh fd;k tkuk pkfg,A

fcYyh gekjk jkLrk dkV n rk vi'kdu eku fy;k tkrk g] vkneh viuh ;k=k Hkj e Hk;Hkhr 'kfdr cuk jgrk g fcYyh dk jkLr d vkj ikj tkuk mldh LokHkkfod pky g og gekjs thou dk iHkkfor ugh dj ldrh] exy ;k 'kfuokj dk fdlh fe= d ?kj tkuk mfpr ugh ekurs] fofHkUu fn'kkvk e Hke.k dk fudyu d fy; Hkh vyx&vyx fnu fu/kkfjr dj j[k g xyr fnu dk ?kj ls fudy x;s rk ij ;k=kdky e O;fDr vugkuh ls Mjk jgrk g] uko ;k rjgo fnu ?kj ykVu e Hkh Mj lek;k jgrk gA iR;d 'kHk dk;l d fy; iR;d iy {k.k 'kHk g rFkk gj cjk dk;l dju d fy; gj iy cjk gA

u;k Hkou cuku mle iio'k dju ij fdlh dh utj u yx ekuo [kiMh dh vkdfr edku dh pkVh e Vkx nrs g io'k }kj ij tr dh ukd Bkd nrs g ;s lc cpdkuh gjdr gA b'oj d vudk ukek e vk…e mldk loJ"B uke g vkid Hkou dh Nr e vk…e dh irkdk /ot ygjkrk jg rk vkid o vkid ifjokj d iR;d lnL; dk rFkk n[ku cky dk vHk;nku o vkuUn dh vuHkfr gkrh jgxhA

xgn'kk d Qj e ge jkg 'kfu dk iUu djus d pDdj e iM jgr gA ;s tM xg o u{k= gekjs thou dk dl iHkkfor dj ldrs g l[k n%[k rk dekuq lkj fnu vkj jkf= dh rjg vkrs tkrs jgrs g dekuq lkj Qy feyuk doy b'oj d gkFk e lfUufgr g vkj dkb O;oLFkk mls ?kVk cMk ugh ldrh] gekjs ekxl e jkLrs e dkb vxghu O;fDr Hkh{kk grq ;kpuk dj jgk gkrk g rk ge mldh vun[kh dj vkx cM tkrs g ijUrq ogh ,d yEc rMx O;fDr chMh ihrs g;s njokts e 'kfunku dh vkokt yxkrk g rk nkMdj mldk nku T;knk J"B le>rs gA ,sls O;fDr rk egur etnjh dj /kukikt d dj ldrk g 'kfunku dh vkokt ij Hkh[k ekx jgk g ,sls dk nku ndj ge mlds fuVBYyiu dk cMkok n jg gkrs gA nku ik= O;fDr dk gh fn;k tkrk pkfg;A

?kj ifjokjk e cM cqtxk d thfor jgrs ge mudh mfpr lok n[kHkky lok lJ'kk ugh djr] ik;% iR;d cqtx vkt mi{kk dk f'kdkj g ijUrq mudh eR;q d mijkUr e'rd Hkkt] fi.Mnku fir Jk) vkfn fd; tku dh iFkk ipfyr g] on vkj xhrk e firj thfor ekrk firk nknk nknh ij nknk ij nknh dk dgk x;k g mudh lok dh tku d LFkku ij eR;q d mijkUr ik[k.M jpk tkrk g cqtxk dh Bhd ls n[kHkky gh Jk) rij.k gA

fnokyh ls igy /kurjl d fnu ge orlu [kjhn dj y{eh dk ?kj yku dk i;kl djrs g oLrqr% y{eh rk mlu fnu vk[k cUn dj orlu cpus oky d ikl tk jgh gkrh g] y{eh og Hkh fVdkm rk doy egurh O;fDr d ikl vkrh o Bgjkrh Hkh g] viuh xg n'kk l/kkju d pDdj e efnjk e fujhg vok/k tkuojk dh cfy p<krs g blls dkb norkk ilUu ugh gkrk g cfy rk viu vUnj fNi n%xq.kk nqO;luk dh pMkuh pkfg; jk"V vorkjokn peRdkjokn dh vo/kkj.kk ls detkj gk jgk g] efrZ dh ik.k ifr"Bk Hkh ,d cM vU/kfo'okl gA

rkRi;l ;g g fd gedk vU/kfo'oklk tMekU;rkvk ls mcj dj jk"V d fuek.k e enn djuh pkfg;A

Gaytri Niwas, Upper Danda Compound, तली ताल, नैनीताल–263002, उत्तराखण्ड

The power of a book

Television and computers have, beyond doubt, enriched the world in many ways. Yet, in other important ways they have also left man in a much impoverished state. Perhaps the one to take the worst beating in the television and the computer era is the lost habit of reading.

Watching television, surfing the net and interacting on social media networks have singularly and jointly left man with little time and less inclination to hunch over a book during hours of leisure. In fact modern man seldom reads for pleasure anymore. Recent analysis on the reading habits of an average adult reveals the truth that reading just does not feature in his agenda. Research also confirms that an average adult does not pick up a book once he takes up employment.

Considering that "reading makes a complete man", this scenario reveals that today's common men are not really 'complete men.'

Reading widens the mind, brings fresh insights, pumps in new perspectives, enhances the readers' language, aids in communication and contributes to a significant increase in cognitive reserves. Unlike viewing television and gazing at the computer monitor, reading boosts the powers of imagination and opens the mind to visualise, assimilate and penetrate any subject matter. Reading is also one of the best ways to get into the very souls of the many inspiring people who have walked the planet. Biographies and auto-biographies that sketch the lives of great men can inspire, educate, encourage and empower the reader to emulate these heroes. Histories come alive through reading. Books bring far flung places of geography next door. It transports the reader to places, provides free counselling, brings consolation, calms the nerves, offers tranquillity, relaxes the mind, brings consolation, keeps the spirit buoyant and gives him an instant vacation at no extra cost. Given the fact that a world of information, knowledge, inspiration and wisdom rests between the pages of a book, reading ought to become an integral part of a man's daily routine. Just as eating three meals a day makes a person healthy, reading three times a day will make him wise and prudent. Investing in books, getting a library membership, visiting book stores, using the free browsing options at book malls, participating in book launches, partaking in book reading at book clubs, forming casual neighbourhood libraries and exchanging books with friends are the baby steps that can be taken to kindle and develop love for books.

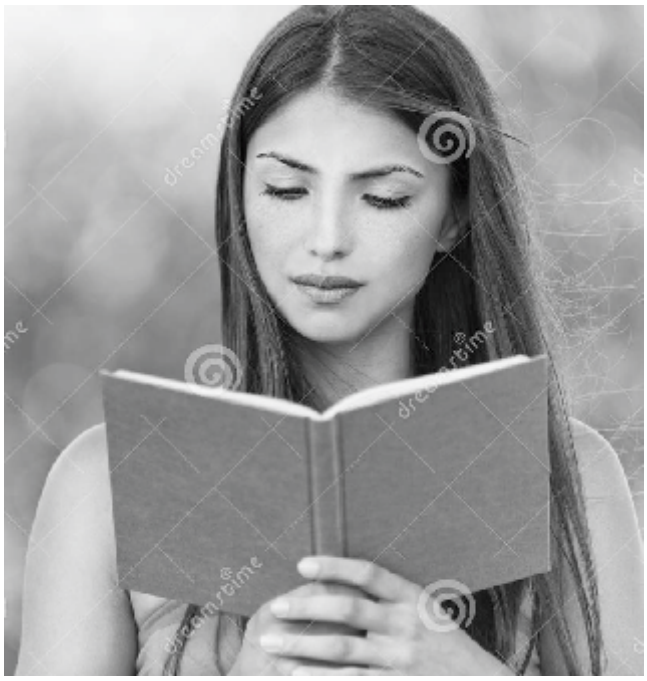

As philosophers often vouch, nothing in life is interesting until one is interested in it. Therefore getting interested in books will culminate into a fruitful habit of reading. After all it is true that those who can read and will not read have no advantage over those who cannot read!

vxj vkidk dqN dguk gS ;k if=dk subscribe djuh gS
dI;k fuEu address ij lEidZ djs
Hkkjr:Unq lwn] 231 lsDVj& 45-A, p.MhxM-160047
0172-2662870] 9217970381] E mail : bhartsood@yahoo.co.in

विज्ञापन

;g if=dk f'kf{kr oxZ ds ikl tkrh gS vki mi;qDr oj o/kq dh ryk'k]fiz; tu dk J)katfy lqeu] vius O;kikj dks vkxs ys tkus ds fy;s 'kqHk&v'kqHk lwpuk foKkiu }kjk ns ldrs gSA

आर्य समाज स्थापना दिवस पर सोचने की बात

भारतेन्दु सूद

चंडीगड़ में सभी आर्यो समाजो ने मिलकर आर्य समाज सैक्टर 27 में आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया। सब व्यवस्था अच्छी थी, लंगर भी था। मंच पर तीन बहुत अच्छे वक्ता थे पर इतने महत्वपुर्ण आर्य समाज के उत्सव पर सुनने वालो की संख्या 40 भी नही थी जब कि चंडीगढ़, मोहाली और पंचकूला की जनसंख्या 30 लाख से उपर है। इससे अधिक व्यक्ति तो आप घर में कोई पूजा पाठ करें और अड़ोस पड़ोस को बुला लें तभी हो जातें है। **स्वभाविक तौर पर मन्त्राणी जी के शब्दों में पीड़ा थी––''लोग नहीं आये। दुख होता है।''** नासिक श्शहर, आर्य समाज के मन्त्री भी एक आर्य समाज में आये थे–– बोले उनके 'kgj में आर्य समाजे तो तीन हैं पर आदमी 10 भी नहीं होते और जो होतें हैं वे भी सब बजूर्ग। क्यों है ऐसे? इस पर एक और आर्य समाज के मन्त्री जी बोले सारे देश की आर्य समाजों का यही हाल है, सिर्फ हमारा ही नही।

अच्छा हो इस दिन हम इन बातों पर विचार करें

1 क्यों पिछले 40 सालों से हमारे बच्चों ने आर्य समाज आना बन्द कर दिया है। एक बात पक्की है कि उनको आर्य समाज नहीं लोभाता।

2 जो आर्य समाजी है भी वे भी आर्य समाज क्यों नहीं आते। आधे आर्य समाजीयों की पत्नियां भी आर्य समाजी नहीं और जो महिलायें आर्यसमाजी हैं उनके पति आर्य समाजी नहीं। जब हम अपने घर के सदस्यों को ही आर्य समाजी नहीं बना सकते तो सारे विश्व को आर्य बना देगें का नारा लगाकर अपने आप से ही छल क्यों करते है।

3 क्यों हमारे आर्य समाजियों की पत्नियां और बच्चे भी आर्य समाज का रास्ता छोड़ सांई, बहम कुमारी, इसकोन इत्यादि मतों में जा रहे हैं। ईश्वर की स्तुती के लिये मन्दिर जाते है, मूर्ती पूजा करते हैं और सांई चलीसा, हनुमान चलिसा आदि पढ़ते हैं पर संध्या हवन कोई नहीं करते

अच्छा हो हम अपने बच्चो से इस vi"k; पर बात करें और कारण जानने की कोशिश करे। क्यूं आज वही समाज जिसने 1870 से 1940 के बीच भारत में जाग्रती लाई थी और हर पढ़ा लिखा व्यक्ति आर्य समाज की और झुकता था आज इस हालत में है कि आज पढ़ा लिखा नवयुवक नवयुवती इस और नहीं झुकते

मेरे अनुसार इस के मुख्य कारण है

1 **हवन का गलत प्रयोग और संस्कृत पर जोर**

&& 1947 के बाद स्वार्थी तत्वों ने **मानव सेवा, पाखण्डों का खण्डन, सामाजिक बुराईयों के विरूध मोरचा खोलना, अन्धविश्वासों के विरूध आवाज उठाना, आर्य समाज के दस नियमों को लोगों तक पहुंचाना और शिक्षा का प्रसार आदि,** जो आर्य समाजों की मुख्य मुददे हुआ करते थे उस के स्थान पर हवन और संस्कृत को ही आर्य समाज की पहचान बना दिया। परिणाम आज 90% आर्य समाजों में सिंफ हवन ही होता है और जैसे होता है उसने हवन को कर्मकाण्ड और व्यवसाय बना दिया है। मैने अपनी बेटी और दामाद से कहा कि अपने शहर की आर्य समाज में ऐतवार को जा कर आना। वे गये जो उन्होने जो मुझे बताया वह इस प्रकार था––पांच बजूर्ग व्यक्ति हवन कर रहे थे। हवन खत्म हुआ, ताला लगाया और चलते बने। एक व्यक्ति express train की रफतार से संस्कृत में मन्त्र बोलता जाता है बाकी तीन चार स्वाह – स्वाह करते रहते हैं। जिन आर्य समाजों में दैनिक हवन की परम्परा हे वहां हालत और भी खराब है। अक्सर पडिंत अकेला ही लगा होता है उसका ध्यान भी मोवाईल में अधिक भगवान में न के बराबर होता है। **जिस में यह समझ न आयें कि ईश्वर से क्या प्रार्थना कर रहे है और ईश्वर में ध्यान न हो वह भक्ति नहीं एक कर्मकाण्ड है।**

बात यह है कि जब हम ईश्वर के साथ ब्रहम यज्ञ अर्थात सन्ध्या द्वारा मिल सकते हैं तो हवन के पीछे क्यों पडे हुऐ है–– आज बदलते समय में किसी के पास इतना समय नहीं कि सवेरे समिधायें लाए, हवन कुण्ड, सामग्री और चार गिलास लेकर बैठे। घी खाने को नही तो हवन क लिये कहां से आयें। (यहां मैं उन 90 % लोगों की बात कर रहां हू जिन्हें घर चलाने के लिये सुवह से शाम तक पसीना बहाना पड़ता है)आज पति पत्नि दोनों नोकरी करतें हैं। दोनों ने खाना बना कर बच्चों को स्कूल भेज कर 10––15 कीलो मीटर travel dj uोकरी के लिये जाना होता है, ऐसे में हवन कहां से कर लेंगे। **हम उनसे संस्कृत के मन्त्र याद करने कि अपेक्षा क्यूं कर रहे हैं जब कि ईश्वर की भक्ति अपनी बोलने की भा"kk मे कहीं अच्छी हो सकती है और यह सच्च्वाई है कि भगवान भा"kk नहीं भावना को सुनता है**A यह भी सत्य है कि हर एक व्यक्ति ईश्वर के समीप जाना चाहता है ऐसे में वह दूसरे धार्मिक स्थलों आदी की शरण लेता है तो स्वभाविक है क्योंकि वहां अपनी भा"kk में प्रार्थना होती है न हवन जैसा कर्मकाण्ड और थोड़े समय में व्यक्ति मन को शांत कर लेता है । यही नहीं आप यात्रा में हैं या दूसरे शहर में हैं तो आप ब्रहम यज्ञ कहीं भी कर सकतें हैं जब की हवन सम्भव

नहीं। ऐसे में जब हमारी आर्य समाजों का सारा जोर हवन और संस्कृत पर है अगर हमारी सन्तान आर्य समाज से दूर होती जा रही है तो हैरानगी की बात नहीं। बड़े दुख की बात है कि स्वार्थी तत्वो ने आर्य समाज की पहचान ही हवन और संस्कृत बना दी है और **आर्य समाज की असली विचारधारा जो कि आर्य समाज के दस नियमों में है दर किनारे कर दिया है। उनकी कोई बात ही नहीं करता।**

कुछ सत्य

जो हवन की बहुत बकालत करते हैं वह भी अपने घरों मं हवन नहीं करतें। खास कर गुरूकुलों से पढे जितने भी हैं दूसरों के घरों में जहां दक्षिणा मिलती है वहां तों करते हैं अपने घरों में नहीं करते। अर्थात वे भी यह जानते है कि ईश्वर भक्ति का आज के समय में यह व्यवहारिक तारिका नहीं। बाकियों की बात तो छोड़ो जिन आर्य समाजों ने पुराहतो को रहने के लिये आवास दे रखें है उन की पत्नियां व बच्चे भी मैने आर्य समाज के हवन में शामिल होते नहीं देखे, अपने आप करना तो दूर की बात है। एक बात सत्य है कि आज के समय में हवन, कमाई के लिये एक कर्मकाण्ड बन गया है, पडितो और आर्य समाज दोनों के लिये।

हवन को आर्य समाज की पहचान बनाना निहायत मूर्खता है। हवन तो दूसरे मतों वाले भी कमाई के लिये बड़ चड़ कर कर रहें हैं। अभी जब सोनिया गान्धी ने रायबरेली में नामांकन मन्त्र भरना था उससे भी हवन करवा दिया जब की वह पक्की ईसाई है। हवन वैसे ही बन गया है जैसे किसी बुत या मजार के आगे झुकना। हमने आहुती देने को वैसे ही बना दिया है जैसे गंगा में डूवकी लेना। आर्य समाज की पहचान आर्य समाज के दस नियम है जिनको अपनाने से घर समाज सब स्वर्ग बन सकते हैं

समाधान

हवन के स्थान पर 'ब्रहम यज्ञ' जिसे सन्धया भी कहा गया है अपनाये।

वेद मन्त्रों के अर्थो को कविता के रूप में पिरो कर, पाठ पुस्तिका के रूप में जैसे कि सुखमणी साहब का पाठ है या हनुमान चालिसा है, बच्चों को दें। ऐसी पाठ पुस्तिका को वह कहीं भी पढ़ सकते है। अगर कोलेज बस में जा रहें हैं या सफर में तब भी ध्यान में जाकर पढ़ सकते है जैसे सिक्खों के बच्चे अपने पास सुखमणी साहब की पुस्तक रखते है और उनको आप कहीं भी पढ़ता हुआ देख सकते हैं।

उदाहरण

ओइम है जीवन हमारा, ओइम प्राणाधार है।
ओइम है करता विधाता, ओइम पालनहार है।
ओइम है दुंख का विनाशक, ओइम सर्वानन्द है।
ओइम है बल तेजहारी, ओइम करूणाकन्द है।
ओइम है पूज्य हमारा, ओइम का पूजन करे।
ओइम के पूजन से हम मन अपना शुध करे।।

तूने हमे उत्पन्न किया पालन कर रहा है तूं,
तुझ से ही पाते प्राण हम दुखियों के क"V gjrk g r]
तेरा महान तेज है छाया हुआ सभी स्थान,
सृश्टि की वस्तु वस्तु मे तू हो रहा है विद्यमान,
तेरा ही धरते ध्यान हम मांगते तेरी दया,
ईश्वर हमारी बुद्धि को श्रेश्ठ मार्ग पर चला

सूर्य चन्द्र के स्वस्थी पथ पर हे प्रभु चलते रहें
दानी, ध्यानी, आहिंसक बन सतसंग सदा करते रहें।।

विद्युत, अग्नि, पवन जल सारे सुख सौभाग्य बड़ायें।
रोग, शोक, भय, त्रास पास हमारे कभी न आये।।
सत्य, धन, ऐश्वर्य, सुबुद्धि सदा शन्ति बढ़ाये।
प्रभु के पद पंकज पर श्रद्धा के हम पुश्प चड़ायें।।
सबका पोशक–धारक ईश्वर सदा शान्ति बरसांवे।
भूमि, पर्वत, मेघ, देव सदा सुख शान्ति बरसांवे।।

सच्चा तू करतार है, सबका पालन हार है ।
तेरा सब को आसरा, सुखों का भण्डार है ।।
नदियां नाले पर्वत सारे तेरी याद दिलाते हैं।
ऋशी मुनी और योगी सारे तेरे ही गुण गाते हैं
विद्या, बुद्वि, तेज ,बल प्रभु आप से मांगते है।
भक्ति का वरदान दे दो यही कामना करते हैं

इस प्रकार हम सभी मुख्य मन्त्रों के भावार्थ की पुस्तिका बना कर अपने बच्चों को दें। वे पढेंगे जैसे हनुमान चलिया पढ़ते हैं। **संस्कुत में मन्त्र न लिखें वरना उसे कोइ हाथ नहीं लगायेगा। मुझे पता है यह संस्कृत प्रेमी कहेंगे उपर साथ में मन्त्र भी लिख दो क्योंकि उनका उदेश्य आर्य समाज प्रचार नहीं संस्कृत प्रचार है और हम आर्य समाज वाले समझते नहीं। जितना आर्य समाज का नुकसान इन संस्कृत प्रमियों, हवनीयों और गुरूकुल वालों ने किया है उतना किसी और ने नहीं। 1870 से 1920 तक यह तीनों ही नहीं थे तो आर्य समाज**

बुलंदियों को छूता गया।

2 **आर्य समाज के दस नियम ही प्रचार का माध्यम बनायें।** आर्य समाज के दस नियम ऐसे हैं जिनको अपनाने से घर, समाज, देश सब स्वर्ग बन सकते हैं। साधारण व्यक्ति को धर्म तथा ईश्वर के बारे में साधारएा बातें ही जाननी होती है, जो कि इन दस निश्मो में सब हैं। दूसरा यह दस नियम आप खुद ही लोंगों को बतला सकतें हैं उसकों बतलाने के लिये पडितों या संस्कृत जानने वालों की आवश्यकता नहीं। सब से बड़ी बात यह दस नियम ही बताते है आर्य समाज है क्या।

gou d ckj e y[kd dk l i”Vhdj.k

अगर आप हवन को समझते हैं, इस के द्वारा ईश्वर से जुड़ सकते है, स्वयं करने के योग्य हैं तो अवश्य करें व परिवार के सभी सदस्यों के साथ करें। परन्तु दूसरा कोई हवन करे व आप केबल स्वाह स्वाह करें, उसका कोई लाभ नहीं, सिर्फ एक अन्ध कर्मकाण्ड है। साथ ही अगर आप सोचें किसी पडित पुरोहित को बुलाकर हवन करवा लिया तो आपको पुण्य मिल जायेगा, तो आप गलती में हैं। भोजन खाने वाले को ही भोजन का लाभ होता है। सामने वाले को नहीं। आज के समय में जब लाखों वाहनो का धुआं वातावरण को अशुद्ध कर रहा है, वातावरण को शुद्ध करने में हवन की उपयोगिता व्यवहारिक नहीं। आम आदमी इसका खर्च नहीं सहन कर सकता। और न ही उसके पास समय है। वही हवन भक्ति में आता है जिसे आप समझकर स्वयं करते है व जिस के द्वारा आप ईश्वर से जुड़ते हैं। जिस व्यक्ति को हवन की समझ नहीं उसे पैसे ऐंठने के लिये यजमान बनाना गलत है।

जब कोई उत्सब त्योहार है जो सामुहिक हवन अवश्य करें जैसे कि **DAV वाले fo'k"k अवसरों पर करते हैं। यह cultural identity** है पर ख्याल रहे हवन छोटा हो, आधे घंटे में खत्म हो जाये। थोड़े ही मन्त्र बोले पर जितने भी बोलें उनका पूरा अर्थ जो वहां पर बैठे है उनको शान्ति से समझायें।

संस्कृत में लम्बें लम्बें हवनो का कोई लाभ नहीं, सिर्फ एक धन्धा व कर्मकाण्ड है। आम व्यक्ति के लिये दिन में आधा घंटा ईश्वर के साथ जुड़ने के लिये बहुत है, आप कैसे भी जुड़े, अगर आप हवन द्वारा ईश्वर से जुड़ जाते हैं तो अवश्य हवन करें और दो समय करें। **पर बच्चों से उमीद न करें न तो वह हवन करेंगे न ही संस्कृत के मन्त्र तोते की तरह बोलेंगे। उन्हें अपनी भा"kk e ब्रहम यज्ञ और आर्य समाज के दस नियमों की और ही प्रेरित करें तभी आर्य समाज जीवित रहेगा।**

vk;l lektk e D;k dj ;g vxy vd e i<

Your Faith Our Mission

MEDICAL/NON-MEDICAL
COMMERCE-ARTS

Your Career Our Goal

All Expert Competent Teachers Under One Roof For

+1
+2

ADMISSION OPEN
LIMITED SEATS

SHASTRI
Model Sr. Secondary School
(affiliated - Pb. School Education Board)
Phase-1, Mohlai, Ph.: 0172-2227211

ADMISSION HELPLINE, 98144-11946, 98765-16703

रजि. नं. : 4262/12 ।।ओ३म्।। फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

Ekgf"k n;kuUn ckyvkJe dh LFkkiuk Qjojh 2013 es p.MhxM+ ds lkFk yxs 'kgj eksgkyh es dh xbZ FkhA iHkq dh vlhe d`ik o vki lc ds lg;ksx ls vkt bl es 10 cPps o nks okMZu gSA bldk fujUrj fodkl gekjk mn~ns'; gSA

Ladies Club SBI LHO Chandigarh spending evening with children

नोट

बाल आश्रम मे **CCTV** केमरा लगाने के जरूरत है इसका खर्चा लगभग **RS 15000** है कोई दानी सज्जन हमारी सहायता करना चाहते है तो हम उनके बहुत आभारी है

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

योगिंदर पाल कौड़ा, नरेन्द्र गुप्ता लेखराम (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

fuek.kl d: 60 o"kl

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Mumbai-23095120,, 9892904519, 25412033, 25334055, Banglore-22875216, Hydrabad-24651472, 24751760, Kolkata-9339344231, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Indore-982633800, Gurgaon-2332988, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790, Yamunanagar-232063, Kanpur-2398775, Nainital-235489, Mukerian-245113, Ujjain-2562140, Porbander-9825275198, Ajmer-2431084, Kota 7597306851, Jhansi-244163 , Saharanpur-09412131021

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

ftu egkuHkkoksa us cky vkJe ds fy, nku fn;k

Sushila Sharma

Kishori Lal Soni

Late Sh. Gian Muni

Vinod

Deepak Mukheja

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2013-2015

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years
in service

DIPLAST
PLASTICS LIMITED
AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870